International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 314-318

चौमूँ–सामोद की बावड़ियों का एक क्षेत्रीय अवलोकन

अजयपाल मीना*
डॉ. कविता**

सार

पानी जीवन का आधार है। प्राचीन मानव ने इसकी महत्व को समझा और ईश्वर की तरह इसकी आराधना की ''जहाँ जल है वहाँ जीवन है, प्राण और स्पन्दन है, गति है, सृष्टि है और जन जीवन का मूलाधार है।'' प्राचीन समय में सभी राजपूत शासकों ने जल संरक्षण हेतु अनेक कार्यों को सम्पादित करवाया। ढूँढ़ाड जनपद के शासकों, सामंतों (जागीरदारों), महारानियों, पासवानों तथा समृद्ध लोगों और महिलाओं एवं बनजारों द्वारा समय–समय पर धार्मिक और कलात्मक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में तालाब, कुएँ, बावड़ी आदि बनवाने के प्रमाण मिले हैं।

शब्दकोशः *बावड़ियाँ, बनजारे, सामन्त, जागीरदार, जनपद।*

प्रस्तावना

मनुष्य में जब से चेतना का संचार हुआ है तब से उसने जल संचयन के नित–नूतन उपक्रम स्थापित किये है। संस्कृत साहित्य में 'बावड़ी' के लिए वापी–वापिका कुण्ड–तड़ाग तथा सरोवर आदि शब्दों का प्रयोग किया था, जिसका अर्थ था – ''जहाँ जल स्तर तक पहुँचने के लिए पांच–सात सीढ़ियों की कई श्रृंखलाएँ हो।'' वापी या तालाब, जिसमें बरसात का जल एकत्रित होता है जिसके चारों ओर सीढ़ियाँ व चबूतरे बने होते हैं जहाँ लोग स्नान, धार्मिक कार्य व अन्य आनुष्ठानिक कार्य करते है। बाव या बावड़ी प्राकृतिक जल स्त्रोत के चारों ओर बनायी जाती, जिसके चारों ओर सीढ़ियाँ बनाकर ऊपर छायादार कक्षों का निर्माण कर, धार्मिक केन्द्रों के रूप में इनका उपयोग किया जाता था।

बावड़ियों के तीन अंग माने गये है – (1) कूप या वृत्ताकार कुण्ड जहाँ से पानी रहट के द्वारा खींचा जा सकता था। (2) सीढ़ियाँ और उन पर बने छायादार स्तम्भ युक्त कक्ष। (3) चारों ओर सोपान युक्त कुण्ड जिसमें पीने का जल या स्नानादि के लिए जल संग्रह होता था। चौमूँ–सामोद के राजपूतों ने अपने शासन कार्य के दौरान अनेक बावड़ियों का निर्माण करवाया है। चौमूँ–सामोद के नाथावत राजपूत, जयपुर रियासत के कच्छवा महाराजाओं के अंश–प्रसुन ही थे। चौमूँ–सामोद के राजपूतों की उपलब्धियाँ 'विश्व इतिहास' में प्रसिद्ध रही है। क्षेत्र में इन राजपूत शासकों ने अपने शासन काल के दौरान 'स्थापत्य कला' को बहुत प्रोत्साहन दिया। चौमूँ–सामोद में बनी स्थापत्य कला की एक अनुकृति के रूप में बावड़ियों का क्षेत्रीय अध्ययन होता आया है। इस क्षेत्र की बावड़ियों का निर्माण यहाँ के महाराजाओं, महारानियों, बनजारों, उच्च वर्ग के लोगों द्वारा करवाया गया है। चौमूँ–सामोद बावड़ियों का अवलोकन निम्नानुसार है :–

चौमूँ की बावड़ी

चौमूँ–सामोद के राजपूतों के क्षेत्र में बनी यह बावड़ी इतिहास प्रसिद्ध रही है। वर्तमान समय में 'चौमूँ की बावड़ी' इसी क्षेत्र में जीर्ण–क्षीर्ण अवस्था में विद्यमान है। इस बावड़ी का निर्माण 400 ई. वर्ष 'चौमूँ महाराज मनोहरदास जी' की सौलंकी रानी 'रतनकुँवरी जी' ने वि.सं. 1624 में निर्माण कार्य करवाया। इस भव्य और

---

* शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल, विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका, एसोसिएट प्रोफेसर, महाराज विनायक ग्लोबल, विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

विशाल बावड़ी की लम्बाई लगभग 90 मी. तथा चौड़ाई 30 मीटर तथा गहराई 18 मीटर तक है। चौमूँ–सामोद क्षेत्र की इस बावड़ी के माध्यम से पूरे क्षेत्र की जल सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति की जाती थी।

इस बावड़ी पर धार्मिक अनुष्ठान भी करवाये जाते थे और आज भी मध्यकाल से लेकर वर्तमान तक यहाँ महिलाओं द्वारा धार्मिक कार्य सम्पन्न होते रहे हैं। यह बावड़ी चार मंजिलों से बनी थी। बावडी के अन्दर के छोटे–छोटे 'कक्ष' भी बने हुये है। यहाँ 'यज्ञ कार्य' सम्पन्न होते थे। इसी बावड़ी के पास प्राचीन राहगीरों के लिए सरायें भी बनी हैं।

अचरोल की बावड़ी

चौमूँ ठिकाने के प्राचीन ऐतिहासिक कस्बे 'अचरोल' में तीन मंजिलों वाली एक विशाल और भव्य बावड़ी विद्यमान हैं। इसका निर्माण चौमूँ नाथावत ठाकुर 'रणजीतसिंह' की पुत्री इंदर कँवर ने 18वीं शताब्दी में करवाया था। इस बावड़ी को भी पानी व धार्मिक कार्यों को सम्पादित करने के लिए बनवाया गया है। इस बावड़ी पर एक लेख है :–

श्री राम जी

''जी ठाकुर साहब रणजी स्यं घ जी

क बाई ईदर कँवर जी न परणाया

यां ण द का मैडता ठा कुरां ली छमन

संघ जी न संवत 1620 की सा श्याला

छ बाई जी फदार री बबत बावड़ी

च त सुदी 2 समत् 1634 का मै तयार हटी।।

इस लेख से बावड़ी के निर्माणकर्ता के बारे में हमें पता चलता है।

सामोद जोल्डी बावड़ी

सामोद राजपूत ठिकाने में बनी यह जोल्डी बावड़ी 160 वर्ष पूर्व 'जगनाथ यादव' नामक व्यक्ति द्वारा बनवायी गई थी।

बावड़ी की स्थापत्य कलां पर मुगल शैली का प्रभाव है। यह बावड़ी धार्मिक कार्य हेतु प्रयोग की जाती थी। जन–समुदाय की सिंचाई व पेयजल की आवश्यकता हेतु भी यह बावड़ी प्रयुक्त होती थी।

लक्खी बनजारे की बावड़ी

चौमूँ नाथावत राजपूतों के शासन में बनी यह बावड़ी चौमूँ क्षेत्र के मध्य भाग में स्थित है। इसका निर्माण 18वीं शताब्दी में स्थानीय 'बनजारों' के सरदार 'लक्खी बनजारे' ने करवाया। यह बावड़ी तीन मंजिला बनी हुयी है तथा तिबारियाँ, चबूतरे तथा बरामदें स्थित थे। यह बावड़ी पेयजल की पूर्ति के साथ धार्मिक कार्यो हेतु भी प्रयुक्त होती थी।

महार की गणेश बावड़ी

ढूँढ़ाड़ अंचल में जयपुर के चौमूँ ठिकाने में सामोद से 20 कि.मी. दूर 'महार गाँव' की 'गणेश बावड़ी' स्थित है। इसका निर्माण लगभग 400 साल पहले नाथावत 'महाराज कर्णसिंह' ने करवाया। महाराज ने बावड़ी का निर्माण स्थानीय लोगों की पेयजल आपूर्ति हेतु करवाया। इस बावड़ी के सामने गणेश मूर्ति स्थापित होने के कारण इसका नाम 'गणेश बावड़ी' पड़ा है। यह बावड़ी वर्तमान में संरक्षण के अभाव में जर्जर अवस्था में हो चुकी है।

नांगल पुरोहितान की बावड़ी

चौमूँ–सामोद राजपूतो के एक क्षेत्र नांगल खुर्द गाँव में स्थानीय 'ब्राह्मण किशोरीदास' ने 19वीं सदी में दो मंजिली बावड़ी का निर्माण करवाया। इस बावड़ी पर तिबारियाँ चबूतरे तथा बरामदों के साथ 'कक्ष' भी बने हुये है। इस बावड़ी का उद्देश्य पेयजल व धार्मिकता रही है।

सामोद की बावड़ी

चौमूँ के सामोद गाँव में स्थित यह प्राचीन बावड़ी स्मारक 350 सात पूर्व स्थानीय ग्रामीणों ने बनवाई। यह बावड़ी तीन मंजिली है तथा यहाँ धार्मिक कार्यो को सम्पादित करने हेतु अनेक कक्ष व तिबारियाँ बनी हुयी है। यह बावड़ी अनेक प्रयोजनार्थ बनाई गयी थी।

अग्रवालों की बावड़ी

चौमूँ राजपूत ठिकाने के 'मोरीजा' नामक स्थान पर इस बावड़ी को एक उच्च वर्ग के अग्रवाल जाति के समृद्ध व्यक्ति द्वार बनावाया गया था। बावड़ी स्थापत्य की दृष्टि से प्राचीन और कलात्मक स्वरूप में थी। बावड़ी में सीढ़ियों का उठाव, बरामदा, तिबारियाँ बनी हुई है। इस बावड़ी का भी धार्मिक व पेयजल की पूर्ति हेतु बनाया गया था। वर्तमान में राजकीय संरक्षण के अभाव में जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है।

निष्कर्ष

चौमूँ–सामोद के राजपूत शासकों के समय बनी यह स्थापत्य कलां की अनुकृतियाँ बावड़ियों के रूप में आज नाथावत व रावल शासकों के शासित क्षेत्रों में राजकीय संरक्षण के अभाव में जीर्ण–शीर्ण अवस्था में स्थित है। इन ऐतिहासिक बावड़ियों को संरक्षण व देखभाल की आवश्यकता है। जिस तरह चौमूँ–सामोद राजपूत क्षेत्र में अनेक बावड़ियाँ बनी हुयी है वैसे ही सम्पूर्ण राजपूताने में राजपूतों के शासितों क्षेत्रों में अनेक बावड़ियाँ बनी हुयी है। इन बावड़ियों को संरक्षण व मरम्मत की जरूरत है। संरक्षण के अभाव में आज ये ऐतिहासिक बावड़ियाँ अपने अस्तित्व को खोती जा रही है। इन बावड़ियों को संरक्षण व देखरेख की आवश्यकता है जिससे यह अपना अस्तित्व बचा सके और राजपूत शासकों की संस्कृति धुमिल होने से बची रही।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पुरा सम्पदा : अ जर्नल ऑफ आर्कियोलोजी एण्ड म्यूजियम्स डिपार्टमेन्ट, राजस्थान 2022, पृ. 19, पु. 54
2. मनोहर, राघवेन्द्र सिंह, 'जयपुर क्षेत्र के ऐतिहासिक स्मारक एवं शिलालेख', पृ. 3, 2019 (जयपुर)
3. शर्मा प्रसाद, हनुमान 'नाथावतों का इतिहास' 1937, जयपुर, पृ. 107–108
4. सिंह, चन्द्रमणि का लेख : बावड़ी स्थापत्य से सम्बन्धित साहित्य, राजस्थान सुजस संचय, जयपुर, 2001
5. जवाहर कला केन्द्र के पुरा सर्वेक्षण सूची, 2020
6. मनोहर, राघवेन्द्र सिंह, 'राजस्थान के प्राचीन नगर और कस्बे', पंचशील प्रकाशन, 2010, जयपुर
7. शोधार्थी द्वारा क्षेत्रीय अध्ययन
8. आकृति : ढूँढ़ाड़ स्थापत्य कला, विशेषांक, अप्रैल–जून, 1997, जयपुर
9. जवाहर कला केन्द्र का सांस्कृतिक सर्वेक्षण में ढूँढ़ाड़ क्षेत्र की बावड़ियाँ, 2021
10. यादव, रामप्रकाश, वंशज पुरातन बावड़ी के संरक्षक 'महार' चौमूँ द्वारा साक्षात्कार
11. मीणा, डॉ. रेणु, ढूँढ़ाड़ क्षेत्र की ऐतिहासिक और पुरातात्विक धरोहर, पृ. 220, पृ. 221
12. सिंह चन्द्रमणी : प्रोटेकटेड मान्यूमेन्ट्स ऑफ राजस्थान, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, 2002, पृ. 72
13. भण्डारकर डी. आर. : प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑफ द आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया बेस्टन सर्किल, बम्बई, पृ. 10–11, पृ. 47
14. कवि, चन्द 'कर्म विलास' 1891 – जयपुर
15. बावड़ियों के संदर्भ में पुरातात्विक सूची – राज्य अभिलेखागार, सचिवालय, जयपुर
16. सामोद को प्राथमिक ऐतिहासिक स्त्रोत – राष्ट्रीय अभिलेखागार, जयपुर ब्रांच।

❖◆❖